



ये किसी प्रकार अजाहिमह व अहाय्यत्व नही  
करे, ना जाग्रह से बाधा डाले, ना कल्या  
कारने का ही प्रयास करे। उद्विग्नता को छोड़  
कर। केवल कल्याण का पावन किया जाता है।  
परावसी कल्याण सुखार् होकर जन्म से कम-  
होगा परावसी इतर इवित्त किया जाये।

↓